नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

राष्ट्रवाद एवं पत्रकारिता विषय पर व्याख्यान

वर्धा 29 मार्च 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के गांधी एवं शांति अध्ययन विभागमें वरिष्ठ पत्रकार

एवं लेखक राजकिशोर की स्मृति में 'राजकिशोर विशेष व्याख्यान माला' के अंर्तगत 'राष्ट्रवाद एवं पत्रकारिता' विषय प्रो. नंदकिशोर आचार्य के विशेष व्याख्यान का आयोजन 26 मार्च को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. मनोज कुमार ने की।

प्रो. आचार्य ने कहा कि वर्तमान राष्ट्रवाद जो यूरोपियन अवधारणा पर आधारित हैं, को भ्रामक बताया क्योंकि वर्तमान राष्ट्रवाद राज्य की शक्तियों को बढ़ाने वाला छद्म राष्ट्रवाद है जो एक खास लोगों के हाथों में सत्ता का केन्द्रीकरण करने का प्रयास है। उन्होने राष्ट्रवाद की जगह राष्ट्रप्रेम शब्द को अपनाने पर ज़ोर दिया क्योंकि राष्ट्र प्रेम शब्द लोगों में स्वतन्त्रता की भावना,मानवीय विवेक एवं सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता है जिससे व्यक्ति अपने विकास की प्रक्रिया में स्वयं हस्तक्षेप कर पाता है। राष्ट्रप्रेम लोगो की स्वतन्त्रता को बढाता है और सृजनात्मकता को विकसित करता है जिससे मनुष्य नैतिकता की ओर अग्रसर होता है। राष्ट्रवाद के वर्तमान स्वरूप के करना ही प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध हुए इसलिए प्रोफेसर राधाकृष्णन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, एम. एन. रॉय एवं विनोबा भावे ने इसका विरोध किया। पत्रकारिता को इन्होने सच का व्यवसाय बताया जिसके आर्थिक एवं व्यावसायिक पहलू भी है। पहले पत्रकारिता ब्रिटिश मॉडल पर आधारित थी जिसमें खबरों की विश्वसनीयता पर ज्यादा ज़ोर दिया जाता था परंतु वर्तमान में यह अमेरिकन मॉडल पर आधारित हो गई है जिसमें तड़क-भड़क एवं सनसनीखेज खबरों को कुछ ज्यादा महत्व दिया जा रहा है जिससे सच में मिलावट आ जाने के कारण यह पत्रकारिकता के

धर्म से दूर हटती जा रही है और इसका एक दूसरा कारण पत्रकारों की योग्यता भी है जो वर्तमान में बहुत ज्यादा गिर चुकी है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रोफेसर मनोज कुमार ने कहा कि 1974 के आंदोलन के उन तत्वों की ओर इसरा किया जो इस आंदोलन के लिए जिम्मेदार थे ये तत्व गरीबी,अशिक्षा,रोजगार एवं भुखमरी आज भी हमारे समाज में जैसे के तैसे खड़े है पर राष्ट्रवाद के नाम पर इन चीजों को दबा दिया गया है। कार्यक्रम का संचालन गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश मिश्र ने किया। इस अवसर पर संस्कृति विद्यापीठ के डीन और गांधी एवं शांति अध्ययनविभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, डॉ. चित्रा माली,डॉ.रामानुज अस्थाना एवं डॉ शरद जायसवाल सहित विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहें।

मा. संपादक/संवाददाता महोदय,

कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें। धन्यवाद।